प्रधानमंत्री ने माना, भाजपा राज्य की दुर्दशा के लिए दोषी: विनोद पांडेय

झारखण्ड की जनता प्रतिकार करना जानती है। यहां की जनता कथनी और करने में फर्क करने वालों को पहचानती है। जनता के हित की बात करने वाले जब व्यापारिक घरानों के इशारे पर चुनावी गठबंधन करते हैं, तो उस सच से भी झारखण्ड की जनता भली-भांति वाकिफ है। झामुमो झारखण्ड की पार्टी है। यहां के लोगों के दर्द का हमें बेहतर पता है और उसका समुचित दवा भी हमारे पास है।

झारखण्ड मुक्ति मोर्चा कहती नहीं, करके दिखाती है। राजनीतिक शुचिता की बात करने वाले कैसे दूसरे दलों के नेताओं को तोड़कर अपने पास बुलाते हैं और उन्हें टिकट देते हैं, इस बात को प्रदेश की जनता देख चुकी है। भाजपा का चुनाव प्रचार करने आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वंशवाद की बात करते हैं। वंशवाद को खत्म करने वाले ये कैसे भूल जाते हैं कि झारखंड के यशवन्त सिन्हा के बाद जयंत सिन्हा को हजारीबाग से टिकट दिया। यशवन्त सिन्हा वित मंत्री थे तो उनके बेटे जयंत सिन्हा को भी वित राज्यमंत्री बनाया। एक ही मंत्रालय में बाप के बाद बेटा, क्या ये वंशवाद नहीं है।

झारखण्ड बलिदानियों की धरती है। झामुमो संघर्ष से निकली हुई स्वाभिमानी पार्टी है। जिसके शासनकाल में गोधरा काण्ड हुआ हो उन लोगों को हर बात में साजिश नजर आती है। तभी तो हत्या की राजनीति की बात की जाती है। झारखण्ड में हत्या की राजनीति की बात कहकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रदेश को एक प्रकार से गाली दी है। शहीदों की धरती कभी भी इस प्रकार की ओछी हरकत नहीं करती है। शहीदों के वंशज हिंसा को रास्ता नहीं अख्तियार करते हैं। माटी के लिए जीने-मरने वाले क्षणिक लाभ के लिए अपना चरित्र नहीं बदलते। एक ही तरह के दो बैलों की बात करने वालों को पता होना चाहिए कि यदि गुजरात ने विकास किया, उस समय केंद्र में भाजपा की नहीं, यूपीए की सरकार थी।

यह सच है कि झारखण्ड में भ्रष्टाचार के कारण विकास नहीं हो पाया। दिल्ली ने हमेशा ही इसे अपने इशारे पर चलाने की कोशिश की है। अधिकत्तर समय वह इसमें सफल भी रही है। एक बार फिर वही खेल रचा जा रहा है। झारखण्ड में भाजपा के पास न कोई स्थानीय नेता है और न ही कोई चेहरा। तभी तो वह भाजपा नहीं, केवल और केवल मोदी की बात कर रही है। क्या मोदी प्रधानमंत्री के साथ-साथ मुख्यमंत्री का कामकाज भी देखेंगे? आखिर जनता को भाजपा बरगला क्यों रही है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखण्ड की अब तक की सरकारों को भ्रष्ट कहा।

ऐसा कहकर उन्होंने यह साबित कर दिया कि झारखण्ड की दुर्दशा के लिए भारतीय जनता पार्टी ही जिम्मेवार है। क्योंकि चौदह वर्षों में नौ वर्षों तक भाजपा ने ही राज किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि राज्य की अब तक की सभी सरकारें भ्रष्ट रहीं हैं, तो फिर ऐसी सरकार चलाने वालों और उन सरकार का हिस्सा रहे लोगों को अपने मंच पर बिठकार उन्हें जिताने का प्रयास क्यों कर रहे हैं? शब्दों के मायाजाल में झारखण्ड की भोली-भाली जनता को गुमराह करना आसान है। झारखण्ड के दुख-दर्द के साथ हर पल साथ रहने का दावा करने वाले मोदी जी पहले ये तो बताएं कि भाजपा जीती, तो फिर मुख्यमंत्री कौन होगा या फिर वो प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा देकर राज्य का मुख्यमंत्री बनेंगे?

मोदी जी कहते हैं कि राजनीति में अहंकार की जगह नहीं होती। हम प्रधानमंत्री जी से सहमत हैं। लेकिन ये जानना चाहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी की सभाओं में राज्य के मुख्यमंत्रियों को जलील करने की कोशिशों को हम क्या कहेंगे? क्या ये प्रधानमंत्री का अहंकार नहीं है, जो अपने सामने किसी की तारीफ न सुनना चाहते हैं और न करना चाहते हैं। मोदी की राजनीति में व्यक्तिवाद की बू आ रही है। प्रधानमंत्री की सभा में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को जलील करने की कोशिशों का ही परिणाम था कि केंद्रीय मंत्रियों का प्रतिवाद किया गया। मोदी जी, इसे अहंकार नहीं, स्वाभिमान कहते हैं। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा स्वाभिमान के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर किसी को यह बुरा लगता है, तेा बुरा लगता रहे। हम झारखण्डी राज्य के स्वाभिमान के लिए ही जीते और मरते हैं।

मंच से गरीब-गुरबों की बात करना और उस पर अमल करना आसान नहीं होता। लोकसभा चुनाव में चुनावी मंच से कालाधन की बात करने वालों ने हर नागरिक को पन्द्रह लाख रुपये मिलने की बात की थी। अब, वही जन-धन योजना का नया शिगूफा छोड़ रहे हैं। आदिवासियों के हित करने वाले और गुजरात मॉडल की दुहाई देने वाले ये भला कैसे भूल जाते हैं कि गुजरात में सबसे अधिक आदिवासियों को विस्थापित होना पड़ा है। तो क्या अब वे झारखण्ड के आदिवासियों को भी विस्थापित करने का हथकंडा अपनाएंगे? एक ही दिन में अलग-अलग सभाओं में कपड़े बदलने वाले नरेंद्र मोदी जब आदिवासियों के बीच जाकर उनके विकास की बात करते हैं, तो साफ झलकता है कि उनकी कथनी और करनी में कितना अंतर है।

- विनोद पाण्डेय, प्रवक्ता, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा